मित्र ज्योति

मित्र ज्योति नेत्रहीन व्यक्तियों के समग्र विकास के लिए कार्य करने वाली देश की प्रमुख संस्था है। अपने नाम के अनुरूप यह शैक्षणिक संसाधन केन्द्र, कम्पयूटर प्रशिक्षण केन्द्र, स्वतंत्र जीवन यापन कौशल प्रशिक्षण, रोजगार सहायता प्रकोष्ठ और दिव्यांग महिला अधिकारिता केन्द्र के द्वारा सचमुच नेत्रहीनों के जीवन में एक नई ज्योति जगा रही है। हमें प्रसन्नता है कि 'कल के लिए' को 'मित्र ज्योति' ने अपनी मित्रता की परिधि में बांध लिया है। 'कल के लिए' 'मित्र ज्योति' के सहयोग से अब ब्रेल में भी प्राप्त की जा सकती है। इस उदार सहयोग के लिए 'मित्र ज्योति' का आभार।

-संपादक

मित्र ज्योति की गतिविधियां

कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्रः इस केन्द्र की शुरुआत वर्ष 2005 में सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की प्रमुख कंपनी आईबीएम द्वारा पूंजीगत निवेश के सहयोग से हुई। इस प्रशिक्षण केन्द्र में आंशिक एवं पूर्ण रूप से दृष्टिबाधित दिव्यांग विद्यार्थियों को कम्प्यूटर के उपयोग से संबंधित बुनियादी एवं उन्नत प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है ताकि वे सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में होने वाले नित नये बदलावों के बारे में जान सकें और उसके अनुरूप स्वयं को तैयार कर सकें। यह प्रशिक्षण नान विजुअल डेस्कटॉप एक्सेज (एनवीडीए) के इस्तेमाल के माध्यम से प्रदान किया जाता है, जो कि एक फ्री स्क्रीन रीडिंग साफ्टवेयर है। यह दृष्टिबाधित दिव्यांगों को स्वतंत्र तरीके से कम्प्यूटर का इस्तेमाल करने में सक्षम बनाता है। कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र तीन महीने की अवधि का एक बेसिक प्रोग्राम (बुनियादी प्रशिक्षण कार्यक्रम) तथा छह महीने की अवधि का एडवांस्ड प्रोग्राम (उन्नत प्रशिक्षण कार्यक्रम) संचालित करता है। ये प्रशिक्षण कार्यक्रम दृष्टिबाधित दिव्यांगों को कम्प्यूटर साक्षर बनाते हैं तथा सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से उनके उज्जवल भविष्य के लिए कम्प्यूटर एवं इंटरनेट की व्यापक दुनिया के द्वार खोल देते हैं। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रवेश लेने वाले

प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण के दौरान मित्र ज्योति की ओर से भोजन एवं रहने की सुविधा भी प्रदान की जाती है। इसकी शुरुआत से लेकर अब तक 1000 से अधिक दृष्टिबाधित दिव्यांगजन इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का लाभ उठा चुके हैं।

इसके साथ ही सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र से जुड़ी एक अन्य अग्रणी कंपनी टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) भी मित्र-ज्योति के साथ मिलकर साल में एक बार दृष्टिबाधित दिव्यांगों के लिए रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन करती है। टीसीएस द्वारा संचालित रोजगारपरक प्रशिक्षण कार्यक्रम से जुड़कर अब तक करीब 60 दृष्टिबाधित दिव्यांगों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया है और इनमें से 50 प्रतिशत से अधिक प्रशिक्षणार्थियों को कंपनी ने अपने यहाँ उपयुक्त कार्यबल में शामिल भी किया है। जबकि शेष प्रशिक्षणार्थियों को आईबीएम, सिसको तथा अन्य बहुराष्ट्रीय एवं सूचना प्रौद्योगिकी कंपनियों में उपयुक्त रोजगार मिला है।

शैक्षणिक संस्थान केन्द्र : मित्र-ज्योति दृष्टिबाधित दिव्यांग. जनों को शैक्षणिक एवं सामान्य पाठ्यसामग्री सुलभ करवाती है। इसमें उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए पठनीय सामग्री यथा- ई टेक्स्ट, ह्यूमन वॉयस, ब्रेल प्रिन्ट्स, लार्ज प्रिन्ट अथवा किसी अन्य विकल्प को शामिल किया जाता है। इन जरूरतों को पूरा करने के लिए मित्र ज्योति की ओर से 'टॉकिंग बुक लाइब्रेरी' (टीबीएल) तथा 'ब्रेल ट्रांसक्रिप्शन प्रेस' की स्थापना की गई है। इन दोनों के माध्यम से दृष्टिबाधित दिव्यांगों की शैक्षणिक जरूरतों को पूरा किया जाता है। जहाँ स्कूल व कॉलेज में पढ़ने वाले दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए ब्रेल ट्रांसक्रिप्शन प्रेस में छपने वाली पाठ्य-पुस्तकें सर्वाधिक उपयोगी होती हैं वहीं प्रौढ़ लोगों के लिए टॉकिंग बुक लाइब्रेरी लाभदायक है जहाँ वे ध्वनि रूपांतरण तकनीक (स्पीच कनवर्जन टेक्नालोजी) के माध्यम से अपनी मनपसंद पुस्तक पढ़ सकते हैं।

टीबीएल में डिजिटल आडियो लाइब्रेरी का काम होता है, जहाँ पुस्तकों को 'डायजीफ (डिजिटल एक्सेसिबल इन्फार्मेशन सिस्टम) प्रारूप में परिवर्तित किया जाता है। 'मडाजीफ' को इस तरह से तैयार किया गया है कि यह मुद्रित पाठ्यसामग्री का पूर्ण रूप से परिवर्तित आडियो स्वरूप है और इसे पूरी तरह से दृष्टिबाधितों एवं डिस्लेक्सिया प्रभावित लोगों की सुविधा के लिए विकसित किया गया है। मित्र ज्योति द्वारा संचालित टॉकिंग बुक लाइब्रेरी के देश भर में 2400 से अधिक सदस्य हैं, जिन्हें अब तक 50000 से ज्यादा कैसेट्स एवं आडियो सीडी का वितरण किया गया है। ये सदस्य लगभग 2800 'मास्टर' डिजिटल आडियो बुक्स का प्रभावी तरीके से इस्तेमाल करते हैं, जिनकी प्रतियाँ (कापीज) बनाकर सदस्यों को वितरित की जाती हैं। किसी भी पाठ्यसामग्री को स्वचालित ध्वनि रूपांतरण तकनीक के माध्यम से पुस्तक का रूप देने के अलावा ज्यादातर पुस्तकों को मित्र-ज्योति के स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं द्वारा पढ़कर रिकार्ड करने की मदद से डिजिटल फार्मेट में परिवर्तित किया जाता है।

मित्र ज्योति की ओर से 'टॉकिंग बुक लाइब्रेरी' (टीबीएल) तथा 'ब्रेल ट्रांसक्रिप्शन प्रेस' की स्थापना की गई है। इन दोनों के माध्यम से दृष्टिबाधित दिव्यांगों की शैक्षणिक जरूरतों को पूरा किया जाता है। जहाँ स्कूल व कॉलेज में पढ़ने वाले दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए ब्रेल ट्रांसक्रिप्शन प्रेस में छपने वाली पाठ्य-पुस्तकें सर्वाधिक उपयोगी होती हैं वहीं प्रौढ़ लोगों के लिए टॉकिंग बुक लाइब्रेरी लाभदायक है जहाँ वे ध्वनि रूपांतरण तकनीक के माध्यम से अपनी मनपसंद पुस्तक पढ़ सकते हैं।

आडियो मैगजीन : ईआरसी की मासिक कन्नड़ आडियो मैगजीन (पत्रिका) 'संचया' पाठकों को विभिन्न विषयों यथा-सम-सामयिक मामलों, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं सूचना प्रौद्योगिकी आदि के बारे में अत्यंत उपयोगी सूचना एवं जानकारी मुहैया कराती है। इस मैगजीन के अब तक 250 से अधिक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं और करीब 2600 प्रतियाँ लाइब्रेरी के सदस्यों को वितरित की गई हैं। इसके अलावा कन्नड़ में ही एक अन्य मैगजीन 'स्पर्धा श्रृंखला' का प्रकाशन भी किया जा रहा है जो प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए विद्यार्थियों को समुचित मार्गदर्शन प्रदान करती है। वर्ष 2014 में इसकी शुरुआत से अब तक 'स्पर्धा श्रृंखला' की 2500 से अधिक प्रतियाँ वितरित की जा चुकी हैं, जिससे सौ से अधिक विद्यार्थी लाभान्वित हुए हैं।

सुगम्य पुस्तकालय : सुगम्य पुस्तकालय दृष्टिबाधित दिव्यांगों के लिए पुस्तकों की कमी को दूर करने के उद्देश्य से अनेक संगठनों द्वारा मिलकर शुरू किया गया प्रयास है। मित्र ज्योति अब सुगम पुस्तकालय के माध्यम से ऑनलाइन लोगों तक अपनी पहुँच बढ़ा रही है। इस अनूठे प्रयास के जरिये हमारी आडियो बुक्स अब मित्र ज्योति के लाभार्थियों को ऑनलाइन उपलब्ध हो रही है। अब तक

मित्र ज्योति ने 1200 से अधिक कन्नड़ एवं अंग्रेजी की पुस्तकों का योगदान किया है, जिनमें सिर्फ पाठ्यपुस्तकें ही नहीं बल्कि विभिन्न विषयों की पुस्तकें, संदर्भ ग्रंथ, कथा एवं गैर कथा साहित्य आदि की पुस्तकें शामिल हैं। यह पुस्तकें विभिन्न आयु वर्ग के लिए उपलब्ध हैं। मित्र ज्योति की आडियो पुस्तकें जल्द से जल्द सुगम्य पुस्तकालय में उपलब्ध होंगी, जैसे ही इन्हें आडियो/डायजीफ फार्मेट में तैयार कर लिया जाएगा वैसे ही इन पुस्तकों को भी हमारे संग्रह में शामिल कर लिया जाएगा। इससे इंटरनेट का इस्तेमाल करने वाले हमारे लाभार्थियों को बहुत मदद मिलेगी क्योंकि उन्हें ये पुस्तकें तैयार होने के बाद तुरंत एवं आसानी से उपलब्ध हो जाएँगी। इसके साथ ही ऑफ-लाइन आर्डर मिलने पर पुस्तकें आडियो सीडीज के रूप में भी हमारे लाभार्थियों को भेजी जाएंगी।

मित्र ज्योति ने ऑनलाइन ई-बुक्स पोर्टल बुकशेयर (https://www.bookshare.org/cms/bookshare-me/who-qualifies) के जरिये भी पुस्तकें मुहैया कराने की शुरुआत की है। इस बारे में और अधिक कार्य इस वर्ष किया जाएगा।

द ब्रेल ट्रांसक्रिप्शन सेन्टर (बीटीसी) : इस सेन्टर में शैक्षणिक पुस्तकों/पत्रिकाओं (मैगजीन्स)/विशेष लेखों/पाठ्यपुस्तकों/अभिरुचि के अनुरूप चयनित सामग्री को इलेक्ट्रानिक प्रारूप से इसे ब्रेल फार्मेट में मुद्रित (छपाई) किया जाता है। वर्ष 2015 में ब्रेल प्रेस की स्थापना के बाद से अब तक ब्रेल में करीब 11,00,000 पृष्ठों की छपाई हो चुकी है। ब्रेल में छपी पुस्तकें विशेष रूप से आंशिक अथवा पूर्ण रूप से दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए बहुत ही मददगार साबित होती हैं। ब्रेल ट्रांसक्रिप्शन सेंटर में एक टैक्टाइल इम्बोसर भी है, जो चित्रों एवं रेखाचित्रों को स्पर्शग्राह्य रूप में मुद्रित कर सकते हैं। स्पर्शग्राह्य (छूकर महसूस किये जाने वाले) चित्र ऐसी आकृतियाँ होती हैं, जो सतह से उठी होती हैं जिससे दृष्टिबाधित लोग उन्हें छूकर महसूस कर सकते हैं। इनका उपयोग शिक्षण में सहायक उपकरण के रूप दृष्टिबाधित बच्चों की मदद के लिए किया जाता है, जिससे वे विभिन्न वस्तुओं जैसे- फल, सब्जियों, बुनियादी जरूरत की वस्तुओं, पशु-पक्षियों, जटिल मानचित्रें (नक्शों) एवं चित्रकृतियों के स्वरूप के बारे में सही जानकारी प्राप्त कर सकें। वर्तमान में ब्रेल ट्रांसक्रिप्शन सेन्टर कक्षा 1 से 10 तक के स्कूली बच्चों के लिए सैकड़ों ब्रेल बुक्स तैयार करने में लगा हुआ है। इन पुस्तकों का चयन विविध विषयों लघुकथाओं से लेकर आत्मकथा तथा स्वास्थ्य व स्वच्छता से लेकर कानूनी अधिकारों तक की व्यापक रेंज से किया गया है। इन पुस्तकों का उपयोग कर्नाटक राज्य के विभिन्न सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए ब्रेल लाइब्रेरी का निर्माण करने हेतु किया जाएगा।

स्वतंत्र जीवनयापन कौशल (इंडिपेंडेन्ट लिविंग स्किल) कार्यक्रम : स्वतंत्र जीवनयापन कौशल कार्यक्रम मित्र ज्योति द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों में सबसे मौलिक व उपयोगी कार्यक्रम है, जो दृष्टिबाधितों को किसी पर निर्भर रहे बिना स्वतंत्र रूप से अपना जीवन बिताने में सक्षम बनाता है। इसमें घर में अकेले रहने पर अपने सभी काम खुद करने और घर से अकेले बाहर निकलने के संबंध में सभी जरूरी बातों की पूरी जानकारी व प्रशिक्षण प्रदान किये जाने के साथ ही उनमें आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास की प्रबल भावना को भरने पर भी जोर दिया जाता है। यह 4 से 6 महीने की अवधि का आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम है, जिसकी शुरुआत वर्ष 1997 में हुई और तब से लेकर अब तक यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक चल रहा है। इन वर्षों में 500 से अधिक लोग इस कार्यक्रम से लाभान्वित हुए हैं और पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर होकर सरकारी एवं सूचना प्रौद्योगिकी सहित निजी क्षेत्र की कंपनियों में नौकरी करते हुए स्वतंत्र रूप से अपना जीवनयापन कर रहे हैं। इस कार्यक्रम में दैनिक जीवन से जुड़ी निम्नलिखित बुनियादी जरूरतों पर ध्यान केन्द्रित कर दृष्टिबाधित दिव्यांगों को प्रशिक्षित किया जाता है :-

- बुनियादी घरेलू कार्य प्रबंधन कुशलता जैसे- सामान्य घरेलू कार्य, चूल्हा जलाना, खाना पकाना, अनाज, सब्जी व मसालों की पहचान करना आदि सिखाना।
- व्यक्तित्व विकास एवं व्यक्तिगत जीवन में कैसे आगे बढ़ें।

क्र.सं. कार्यक्रम	अब तक के कुल लाभार्थी
शैक्षणिक संसाधन केन्द्र (टाकिंग बुक लाइब्रेरी एवं ब्रेल ट्रांसक्रिप्शन प्रेस सहित)	8500 से अधिक प्रमुख लाभार्थी 34000 से अधिक सह लाभार्थी
कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र	1000 से अधिक लाभार्थी
स्वतंत्र जीवनयापन कौशल प्रशिक्षण	500 से अधिक लाभार्थी
रोजगार सहायता प्रकोष्ठ	1000 लाभार्थी
दिव्यांग महिला अधिकारिता केन्द्र (CEWD)	50 से अधिक लाभार्थी

- गतिशीलता प्रशिक्षण- घर के भीतर व घर से बाहर अकेले आना-जाना, रहना व खुद को संभालना।
- स्वास्थ्य, यौन शिक्षा एवं प्रजनन आदि के बारे में जानकारी।
- बुनियादी दस्तकारी/शिल्प कार्य जैसे- सिलाई, कढ़ाई, बैग/बास्केट बनाना, लिफाफा बनाना एवं अन्य हैन्डीक्राफ्ट संबंधित कार्य करना आदि, जिससे उन्हें अपने दैनिक जीवन में मदद मिले और आगे चलकर वे इस कौशल के जरिए लघु एवं कुटीर उद्योगों में रोजगार हासिल कर जीविकोपार्जन कर सकें।
- दृष्टिबाधित दिव्यांगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए विशेष रूप से तैयार किया गया आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण।
- प्रशिक्षण एवं प्रशिक्षक कार्यक्रम का संचालन करना।

रोजगार सहायता प्रकोष्ठ (जॉब प्लेसमेंट सेल) : मित्र-ज्योति द्वारा दृष्टिबाधित दिव्यांगों को प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात जीविकोपार्जन के लिए उपयुक्त रोजगार दिलाने में सहायता के लिए वर्ष 1999 में रोजगार सहायता प्रकोष्ठ की स्थापना की गई। स्थापना के बाद से अब तक 17 वर्षों में इस सेल ने 1000 से अधिक दृष्टिबाधित दिव्यांगों को उपयुक्त रोजगार दिलाने में मदद की है। यह प्रकोष्ठ दृष्टिबाधितों को रोजगार दिलाने के लिए हरसंभव सहयोग प्रदान करता है जैसे- मानसिक तैयारी, रोजगार के लिए आवश्यक प्रशिक्षण, कौशल प्रशिक्षण, आवेदन पत्र तैयार करना तथा उनके आवागमन की समुचित व्यवस्था करना आदि। इस प्रकोष्ठ ने मुख्य रूप से दृष्टिबाधितों को सूचना प्रौद्योगिकी तथा सरकारी एवं गैर-सरकारी क्षेत्रों में रोजगार दिलाने में सफलता हासिल की है।

दिव्यांग महिला अधिकारिता केन्द्र (सेन्टर फॉर इम्पावरमेंट ऑफ वुमेन विद डिसएबिलिटी) : मित्र-ज्योति ने हंस फाउण्डेशन के सहयोग से 'दिव्यांग महिला अधिकारिता केन्द्र' की स्थापना की है। दिव्यांग महिला अधिकारिता केन्द्र कामकाजी दिव्यांग महिलाओं के लिए रहने की एक सुरक्षित एवं संरक्षित जगह है। यह एक अत्याधुनिक सुविधायुक्त छात्रावास है, जो बेंगलूरू के इलेक्ट्रानिक सिटी में काम करने वाली अथवा अध्ययनरत शारीरिक व दृष्टिबाधित दिव्यांग महिलाओं के लिए उपलब्ध है। यह केन्द्र दिव्यांगजनों की विशेष जरूरतों का पूरा ध्यान रखता है।

- मित्र-ज्योति में आने वाले लाभार्थी पूरे देश से होते हैं। ये मुख्यत: आर्थिक रूप से पिछले एवं उपेक्षित समुदायों के दृष्टिबाधित दिव्यांगजन होते हैं, जिसमें महिलाओं एवं विद्यार्थियों को प्रमुखता दी जाती है।
- हमारे लाभार्थियों में सामान्यतया दक्षिण भारत के विभिन्न क्षेत्रों तथा विशेष रूप से कर्नाटक के ग्रामीण इलाकों के ज्यादातर दिव्यांगजन होते हैं, जहाँ हमारी पहुँच अधिकतम है।
- मित्र-ज्योति द्वारा संचालित कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम में अब तक भारत के 27 राज्यों के 128 जिलों के विद्यार्थियों ने कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्राप्त किया है। जबकि इसी प्रशिक्षण कार्यक्रम में कर्नाटक के कुल 30 जिलों में से 28 जिलों के विद्यार्थी अब तक शामिल हुए हैं।

मित्र-ज्योति ने अपनी स्थापना से लेकर अबतक विगत 27 वर्षों में शिक्षा, परामर्श एवं तकनीकी प्रशिक्षण के माध्यम से हजारों दिव्यांगजनों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाकर स्वतंत्र रूप से सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अवसर प्रदान करने के साथ ही

घर में अकेले रहने पर अपने सभी काम खुद करने और घर से अकेले बाहर निकलने के संबंध में सभी जरूरी बातों की पूरी जानकारी व प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। यह 4 से 6 महीने की अवधि का आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम है, जो 1997 से अब तक सफलतापूर्वक चल रहा है। इन वर्षों में 500 से अधिक लोग इस कार्यक्रम से लाभान्वित हुए हैं और पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर होकर सरकारी एवं सूचना प्रौद्योगिकी सहित निजी क्षेत्र की कंपनियों में नौकरी करते हुए स्वतंत्र रूप से अपना जीवनयापन कर रहे हैं।

उनके जीवन से अंधकार को दूर कर आलोकित करने का सोद्देश्यपूर्ण कार्य किया है। इसका लाभ केवल कर्नाटक ही नहीं अपितु पूरे देश के उन दिव्यांगजनों को मिला है, जो अब तक मित्र-ज्योति के संपर्क में आये हैं। यह सिलसिला अनवरत रूप से जारी है।

मित्र-ज्योति द्वारा दिव्यांगजनों के जीवनोत्थान एवं कल्याण हेतु शुरू किये गये प्रयासों यथा- ब्रेल ट्रांसक्रिप्शन सेंटर, द टाकिंग बुक लाइब्रेरी, स्वतंत्र जीवनयापन कौशल प्रशिक्षण, कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा रोजगार सहायता प्रकोष्ठ आदि ने सामान्य दिव्यांगों एवं दृष्टिबाधित दिव्यांगजनों की दुनिया ही बदल दी है। इससे अब वे आत्मनिर्भर होकर अपने पैरों पर खड़े होने का सपना देख ही नहीं सकते बल्कि उस सपने को साकार भी कर पा रहे हैं।

■